COURSE :- MASTER OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE (MLIS)

PAPER :- 2ND

(INFORMATION SYSTEM & PROGRAMME)

TOPIC :- AGRIS (International Information System for Agricultural Science and Technology)

(एगरिस)

उद्देश्य :- इस पाठ में एगरिस के बारे में जानकारी प्रदान करना है I

PREPARED BY :- DINESH SINGH, CHIEF COORDINATOR, LIBRARY SCIENCE, NOU

(AGRIS : International Information System for Agricultural Science and Technology)

इस संस्था की स्थापना खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित सूचना के प्रचार-प्रसार व आदान-प्रदान के उद्देश्य से की गई।

विशेषतायें (Features) :

इस तन्त्र की निम्न विशेषतायें हैं :

1. यह एक अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी तन्त्र है।
2. यह एक कम्प्यूटराइज्ड सूचना संग्रह एवं पुनः प्राप्ति तन्त्र है।
3. इस तन्त्र में सम्मिलित की जाने वाली सूचना का चयन एवं संकलन स्थानीय स्तर पर राष्ट्रीय व क्षेत्रीय निवेश केन्द्रों द्वारा किया जाता है।
4. विषय अनुक्रमणीकरण हेतु पर्याप्त शब्दकोश का प्रयोग किया गया है।
5. इस तन्त्र में सूचना के रखरखाव एवं प्रबन्ध हेतु सूचना विज्ञान की आधुनिकतम तकनीकों का प्रयोग किया गया है।
6. इस तन्त्र द्वारा सी. ए. एस. (CAS), एस. डी. आई. (SDI) आदि सेवायें प्रदान की जाती हैं।
7. यह तन्त्र समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता रहता है।

आवश्यकता (Need) :

कृषि एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में साहित्य प्रकाशन में तेजी आई तथा सभी वैज्ञानिकों को समय पर सूचना प्राप्त नहीं हो पाती। इस कारण यह महसूस किया गया कि कृषि व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे सूचना तन्त्र की स्थापना की जाये जो सूचना के प्रसार-प्रचार व आदान-प्रदान में अपना सहयोग कर सके।

इस समस्या के समाधान हेतु कृषि अनुसन्धान एवं विकास में वैज्ञानिक व तकनीकी सूचना की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते हुये खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक ने 1969 में विशेषज्ञों का एक दल नियुक्त किया। इस दल ने विचार-विमर्श के बाद 1970 मे यह सुझाव दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सूचना तन्त्र की स्थापना की जाये।

इस तन्त्र को इनकी गतिविधियों के अनुसार दो भागों में बाँटा जा सकता है :

1. AGRIS Level-I
2. AGRIS Level-II.

1. एग्रिस स्तर-I

(AGRIS Level-I)

1975 में यह पूर्ण रूप से कार्यशील हुआ। खाद्य एवं कृषि संगठन, विभिन्न सरकारों तथा संस्थाओं के आपसी सहयोग से स्थापित इस अन्तर्राष्ट्रीय तन्त्र के अन्तर्गत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित प्रलेखपरक सूचना की विस्तृत एवं व्यापक सूची निर्मित होती है। इस हेतु विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों में प्रकाशित सम्बद्ध पाठ्य सामग्री को राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय निवेश केन्द्रों द्वारा एकत्रित एवं चयनित कर मानक प्रारूप में सूचीकृत एवं वर्गीकृत किया जाता है।

वर्तमान में 128 राष्ट्रीय केन्द्र एवं 17 अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र नियमित रूप से निवेश प्रदान कर रहा है। यह निवेश चुम्बकीय फीते, छिद्रित पत्रक फीते, प्रकाशकीय वर्ण पहचान पत्र निवेश पत्र अथवा फ्लोपी डिस्क के रूप में भेजा जा सकता है। इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की सूचनायें प्रदान की जाती हैं।

(i) एग्रिन्डेक्स (AGRINDEX) : यह एक मासिक अनुक्रमणीकरण पत्रिका है जिसके प्रत्येक अंक में 50 भाषाओं के 7000 से भी अधिक सामयिकी एवं अन्य प्रकाशनों में चुने हुये लगभग 11,000 सन्दर्भ सम्मिलित किये जाते हैं। प्रविष्टियाँ 17 मुख्य विषय शीर्षक में वर्गीकृत की जाती हैं तथा प्रत्येक विषय शीर्षक के अन्तर्गत भौगोलिक क्षेत्र अथवा वस्तु के अनुसार एक संख्यात्मक कोड के आधार पर व्यवस्थित होती है।

प्रत्येक प्रविष्टि में आख्या, लेख की भाषा, लेखक का नाम, प्रथम लेखक का संक्षिप्त पता, पत्रिका का नाम, खण्ड संख्या, अंक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, प्रकाशन का स्थान एवं प्रकाशन का नाम आदि से सम्बन्धित सूचना प्रदान की जाती है।

(ii) एग्रिस चुम्बकीय फीते पर (Agris on Magnetic Tape) : इसकी आधार सामग्री की सुवाच्य माध्यम चुम्बकीय फीते के रूप में प्राप्त होता है। इस पर अंकित सूचना लगभग एग्रिन्डेक्स की प्रतिबिम्ब समान होती है। इन फीतों पर सूचना अन्तर्राष्ट्रीय मानक प्रारूप ISO-2709 के अनुसार अंकित होती है जिसे कम्प्यूटर द्वारा प्रक्रियाशील किया जा सकता है।

(iii) एग्रिस ऑन लाइन सेवा (Agris Online Service) : एग्रिस आधार सामग्री को अब दूरस्थ स्थानों में खोजा जा सकता है तथा सेवायें प्राप्त की जा सकती हैं। वर्तमान में यह निम्न मेजबान कम्प्यूटरों पर उपलब्ध हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार तन्त्रों—टैलेक्स, टेलीफोन एवं पैकिट, स्विचिंग नेटवर्क की सहायता से इस तक पहुँचकर नवीनतम अथवा पूर्वगामी सूचना प्राप्त की जा सकती है :

1. अन्तर्राष्ट्रीय आणविक ऊर्जा एजेंसी, वियना।
2. डच औषधि प्रलेखन एवं संस्थान, जर्मनी।
3. डायलॉग, अमेरिका।

(iv) एग्रिस संहत तश्तरी पर (Agris on CD-ROM) : लेजर टेक्नोलोजी की सहायता से प्रकाशीय संग्रह माध्यम के विकास से उपर्युक्त समस्यायें आसानी से हल हो गई हैं। इस टेक्नोलोजी द्वारा ऐसी संहत तश्तरी निर्मित की गई है जो स्वरूप में श्रव्य संहत तश्तरी के समान है तथा जिस पर सूचना का विशाल भण्डार संग्रहीत किया जा सकता है। 12 सेमी. व्यास की इस तश्तरी पर 55-60 करोड़ वर्ग संग्रहीत किये जा सकते हैं। यह तश्तरी सी.डी. रोम (CD-ROM—Compact Disc-Read Only Memory) के नाम से जानी जाती है।

(AGRIS Level-II)

विशेषज्ञों के दल ने जब खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक को एग्रिस स्थापित करने का सुझाव दिया था उस समय इसे दो स्तरों में कार्यशील करने का प्रस्ताव पारित किया गया था ताकि प्रत्येक स्तर द्वारा विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्त्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। उनके अनुसार स्तर I शोध सामयिक अभिज्ञता सेवा प्रदान करेगा तथा स्तर II विशिष्ट सूचना सेवाओं, सूचना केन्द्रों, सूचना विश्लेषण केन्द्रों एवं आधार सामग्री सूचिकाओं का समन्वित तन्त्र होगा।

स्तर II की गतिविधियाँ शुरू करने हेतु पशु चिकित्सा विज्ञान (Veterinary Science), वन विज्ञान (Foresting), उष्णदेशीय कृषि (Tropical Agriculture) आदि विषयों का चयन किया गया एवं कई अग्रगामी अध्ययन दल नियुक्त किये गये। खाद्य एवं कृषि संगठन के दायरे के बाहर अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा इस दिशा में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप कई विशिष्ट सूचना विश्लेषण केन्द्रों की स्थापना की गई जो अत्यन्त सूक्ष्म विषय क्षेत्र उदाहरणार्थ एक फसल जैसे—गेहूँ, चावल अथवा एक विशिष्ट पहलू जैसे सिंचाई आदि से उसी प्रकार की सूचना, सेवायें प्रदान कर रहे हैं जिनकी परिकल्पना एग्रिस स्तर II में की गई है। ये केन्द्र मुख्यतया अन्तर्राष्ट्रीय विकास अनुसंधान केन्द्र (International Development Research Center) कनाडा तथा अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसन्धान परामर्श दल (Consultative Group on International Agriculture Research) अमेरिका के सहयोग एवं प्रयोजन से ऐसे राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थानों में स्थापित किये गये हैं वहाँ उन्हीं विषयों/पहलुओं पर अनुसन्धान कार्य हो रहा है।

वर्तमान में कार्यरत ईसका सूचना केन्द्र, (Eassaka Information Centre) कोलम्बिया, उष्णदेशीय दलहन सूचना केन्द्र, (Tropical Grain Legume Information Centre) नाइजीरिया, अन्तर्राष्ट्रीय सिंचाई सूचना केन्द्र, (International Irrigation Information Centre) इस्त्राइल, नारियल सूचना केन्द्र, (Coconut Information Centre) श्रीलंका, अन्तर्राष्ट्रीय भैंस सूचना केन्द्र, (International Buffalo Information Centre) थाइलैण्ड तथा अर्द्ध शुष्क फसल सूचना केन्द्र (Semi Arid Tropical Crops Information Centre) भारत आदि विशिष्ट सूचना केन्द्रों के ऐसे उदाहरण हैं जो पिछले कई वर्षों से सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। ये विकासशील देशों की सूचना की आवश्यकताओं को भलीभाँति पूरा कर रहे हैं।